अभिनेता-फिल्मकार शशि कपूर : दादा साहब फाल्के पुरस्कार

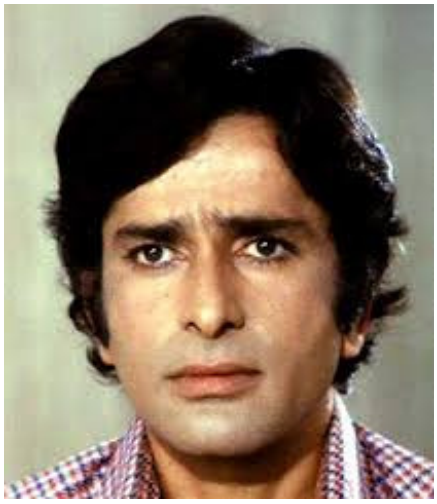

बॉलीवुड के वरिष्ठ अभिनेता-फिल्मकार शशि कपूर ने 10 मई 2015 को प्रतिष्ठित दादा साहब फाल्के पुरस्कार ग्रहण किया. **मुंबई** मे ऐतिहासिक पृथ्वी थिएटर में केंद्रीय सूचना प्रसारण मंत्री अरुण जेटली ने उन्हें इस सम्मान से नवाजा.

वरिष्ठ कलाकार दिवंगत राजकपूर और शम्मी कपूर के छोटे भाई शशि अपनी बीमारी के वजह से तीन मई को हुए पुरस्कार वितरण समारोह में दिल्ली नहीं आ सके थे. इसलिए आज जेटली ने मुंबई जाकर उन्हें यह पुरस्कार दिया.

कपूर को सम्मान दिए जाने के बाद जेटली ने कहा, 'यह एक महत्वपूर्ण पल है जब हमारे एक वरिष्ठ अभिनेता को इस पुरस्कार से नवाजा जा रहा है. यह शशि कपूर को दिया जा रहा है. वह निश्चित रुप से भारतीय सिनेमा का एक ऐसा बहुआयामी व्यक्तित्व हैं जो कभी कभी जन्म लेता है. एक अभिनेता के साथ साथ वे एक अच्छे निर्माता और निर्देशक

भी हैं. हम उन्हें यहां उनके द्वारा स्थापित संस्थान में सम्मानित कर रहे हैं.'

77 वर्षीय शशि कपूर परिवार के तीसरे सदस्य हैं जिन्हें सरकार की ओर से इस पुरस्कार से नवाजा गया है. इससे पहले उनके पिता पृथ्वीराज कपूर और बडे भाई राज कपूर को इस सम्मान से नवाजा जा चुका है.

जेटली ने कहा,' अगर इसी तरह की प्रतिभा कपूर परिवार से आती रही तो मैं निश्चित रुप से कह सकता हूं कि यह उनके परिवार के लिए आखिरी पुरस्कार नहीं होगा.' उन्होंने कहा, 'मैं उनके अच्छे स्वास्थ्य और लंबे जीवन की कामना करता हूं.'

काले लिबास पर एक नारंगी शॉल पहने शशि ने पृथ्वी थिएटर में एक व्हीलचेयर पर प्रवेश किया. सम्मानित करते हुए जेटली ने उन्हें एक प्रमाणपत्र, शॉल, मेडल और एक चेक दिया. पुरस्कार ग्रहण करने के बाद कपूर ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों का नमस्ते कर अभिवादन किया.

पृथ्वी थिएटर की स्थापना शशि ने अपने पिता की याद में की थी, जो फिलहाल उनकी बेटी संजना की देखरेख में फलफूल रहा है. शशि का जन्म 18 मार्च 1938 को पृथ्वीराज कपूर के यहां हुआ था. चार साल की उम्र से ही वह अपने पिता के निर्देशन में बनने वाले नाटकों में काम करने लगे थे.

शशि कपूर का असली नाम बलबीर राज कपूर है। इनका जन्म जाने मने अभिनेता पृथ्वीराज कपूर के के घर पर हुआ। अपने पिता एवं भाइयो के नक़्शे कदम पे चलते हुए इन्होने भी फिल्मो में ही अपनी तक़दीर आजमाई. शशि कपूर ने ४० के दसक से ही फिल्मो में कम करना शुरू कर दिया था। उन्होंने कई धार्मिक फिल्मो में भूमिकाये निभाई. इन्होने मुंबई के डोन बोस्की स्कूल से पढाई पूरी की. पिता पृथ्वीराज कपूर इनको छुट्टियों के दौरान स्टेज पर अभिनय करने के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे। इसकी का नतीजा रहा की शशि के बड़े भाई राजकपूर ने उन्हें 'आग' (१९४८) और 'आवारा' (१९५१) में भूमिकाएं दी. आवारा में उन्होंने राजकपूर के बचपन का रोल किया था। ५० के दसक पिता की सलाह पर वे गोद्फ्रे कैंडल के थियेटर ग्रुप 'शेक्स्पियाराना' में शामिल हो गए और उसके साथ दुनिया भर में यात्राये की. इसी दोरान गोद्फ्रे की बेटी और ब्रिटिश अभिनेत्री जेनिफर से उन्हें प्रेम हुआ और मात्र २० वर्ष की उम्र में १९५० में विवाह कर लिया।

शशि कपूर ने गैर परम्परागत किस्म की भूमिकाओ के साथ सिनेमा के परदे पर आगाज किया था। उन्होंने सांप्रदायिक दंगो पर आधारित धर्मपुत्र (१९६१) में काम किया था। उसके बाद चार दीवारी और प्रेमपत्र जैसी ऑफ बीत फिल्मो में नजर आये. वे हिंदी सिनेमा के पहले ऐसे अभिनेता थे जिन्होंने हाउसहोल्डर और शेक्सपियर वाला जैसी अंग्रेजी फिल्मो में मुख्या भूमिकाये निभाई. वर्ष १९६५ उनके लिए एक महत्वपूर्ण साल था। इसी साल उनकी पहली जुबली फिल्म 'जब जब फूल खिले' रिलीज हुयी और यश चोपड़ा ने उन्हें भारत की पहली बहुल अभिनेताओ वाली हिंदी फिल्म 'वक्त' के लिए कास्ट किया। बॉक्स ऑफिस पर लगातार दो बड़ी हिट फिल्मो के बाद व्यावहारिकता का तकाजा यह था की शशि कपूर परम्परागत भूमिकाये करे, लेकिन उनके अन्दर का अभिनेता इसके लिए तैयार नहीं था। इसके बाद उन्होंने 'ए मत्तेर ऑफ़ इन्नोसेंस' और 'प्रीटी परली ६७' जसी फिल्मे की. वहीँ हसीना मन जाएगी, प्यार का मौसम ने उन्हें एक चोकलेटी हीरो के रूप में स्थापित किया। वर्ष १९७२ की फिल्म सिथार्थ के साथ उन्होंने अन्तराष्ट्रीय सिनेमा के मंच पर अपनी मौजुदगी कायम रखी. ७० के दशक में शशि कपूर सबसे व्यस्त अभिनेताओ में से एक थे। इसी दशक में उनकी 'चोर मचाये शोर', दीवार, कभी - कभी, दूसरा आदमी और 'सत्यम शिवम् सुन्दरम' जैसी हिट फिल्मे रिलीज हुयी. वर्ष १९७१ में पिता पृथ्वीराज की मृत्यु के बाद शशि कपूर ने जेनिफर के साथ मिलकर पिता के स्वप्न को जारी रखने के लिए मुंबई में पृथ्वी थियेटर का पुनरूथ्थान किया। अमिताभ बच्चन के साथ आई उनकी फिल्मो दीवार, कभी - कभी, त्रिशूल, सिलसिला, नमक हलाल, दो और दो पाँच, शान ने भी उन्हें बहुत लोकप्रियता दिलवाई. १९७७ में इन्होने अपनी होम प्रोडक्सन क. 'फिल्म्वालाज' लॉन्च की.

उन्होंने अपने फिल्मी करियर की शुरुआत 40 के दशक के उत्तरार्द्ध में बाल कलाकार के रुप में की थी. बाल कलाकार के तौर पर उन्होंने 'आग' और 'आवारा' में काम किया था जहां उन्होंने राज कपूर के बचपन का किरदार अदा किया था। शशि ने 1950 के दशक में सहायक निर्देशक के तौर पर भी काम करना शुरु किया.

कपूर ने फिल्मों में नायक के रुप में पदार्पण वर्ष 1961 में फिल्म 'धर्मपुत्र' से किया था और अब तक वह 116 से भी ज्यादा फिल्मों में काम कर चुके हैं. 'नमक हलाल', 'दीवार', 'कभी कभी' और 'काला पत्थर' उनकी काफी सराही गई फिल्में हैं.

वर्तमान में वे गुर्दे की बीमारी से पीडित हैं जिस वजह से व्हीलचेयर पर रहते हैं. वर्ष 2011 में उन्हें पद्म भूषण से नवाजा गया था.